ISSN2393-8838
Date of Publishing 19th August Vol. No.37 Issue No.8
AUGUST
Rs.10/-

मासिक

इसलाहे समाज

समाज सुधारक पत्रिका

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: "बहादुर वह नहीं जो पछाड़ने वाला हो बल्कि बहादुर वह है जो गुस्से के वक़्त खुद पर कंट्रोल रखे"।
(सहीह बुखारी, सहीह मुस्लिम)

मेहमान - नवाजी

मुहम्मद अज़हर मदनी

इस्लाम ने इंसान की ज़िंदगी के हर पहलू के लिए मार्गदर्शन दिया है। पड़ोसी के अधिकार हों, रिश्तेदारों के हक़ हों, ग़रीबों की मदद हो या मेहमान के साथ अच्छा व्यवहार हर मामले में इस्लाम ने सुंदर शिक्षाएँ दी हैं। मेहमान की इज़्ज़त और अच्छी मेहमान-नवाजी भी एक सच्चे मोमिन की पहचान है। हजरत अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहो अन्हो) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह अपने मेहमान की इज़्जत करे और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह अपने पड़ोसी को तकलीफ न दे और जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे। और एक रिवायत में पड़ोसी के बजाय यह है कि जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है वह सिलह-रहमी करे।(सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में मेहमान-नवाज़ी की अवधि के बारे में बताया गया है। हजरत अबू शुरैह कअबी बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, वह अपने मेहमान की इज़्जत करे। एक दिन और एक रात अच्छी तरह इंतज़ाम करे और मेहमान-नवाजी तीन दिन तक है। इसके बाद सदक़ा है और मेहमान के लिए यह जायज नहीं कि वह अपने मेज़बान के यहाँ इतना ठहरे कि उसे परेशानी में डाल दे। (सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम)

इस्लाम की खूबसूरती यह है कि वह हमें दूसरों के व्यवहार का बदला उसी व्यवहार से देने के बजाय भलाई और अच्छे आचरण की शिक्षा देता है। हजरत अबुल-अहवस अपने पिता से बयान करते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि यदि कोई व्यक्ति मेरी मेहमान-नवाजी न करे और बाद में वह मेरे यहाँ आए, तो क्या मैं भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करूँ? आपने फरमायाः "नहीं, तुम उसकी मेहमान-नवाजी करो।" (सुनन तिर्मिज़ी)

इन उल्लिखित हदीसों से स्पष्ट होता है कि मेहमान की इज़्जत करना, उसके साथ प्रेम और सम्मान से पेश आना तथा अपनी क्षमता के अनुसार उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना एक अच्छे मुसलमान की पहचान है।

अल्लाह तआला हमें मेहमानों के अधिकारों को समझने, उनका सम्मान करने, अच्छी मेहमान-नवाजी करने और हर परिस्थिति में अच्छे व्यवहार को अपनाने की तौफीक अता फरमाए। आमीन।

मासिक
इसलाहे समाज
अगस्त 2026 वर्ष 37 अंक 8
रबीउल अव्वल 1448 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

मुहम्मद ताहिर

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कॉपी	10 रुपये

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद ताहिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से एम.एस. प्रिन्टर्स, **A-145** गली न० **8** चौहान बांगर, सीलमपुर, दिल्ली-**53** से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल **4116**, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-**6** से प्रकाशित किया।

सम्पादक: मुहम्मद ताहिर

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. मेहमान नवाज़ी 02
2. जश्न-ए-आज़ादी मनाइए और इसकी क़द्र (सम्मान) कीजिए 04
3. नेक कामों के द्वारा अपने आपको जहन्नम की आग से बचाओ 07
4. हर समय नबी सल्ल० पर दरूद भेजें 08
5. माता पिता के अधिकार 10
6. इस्लाम में शिक्षा का महत्व और महिलाओं की शिक्षा 12
7. रिश्वत देना और लेना, दोनों हराम है 13
8. रिपोर्टः भव्य राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन रिपोर्ट 14
9. मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़ 20
10. जमाअती ख़बरें 24
11. २२वाँ आल इंडिया मुसाबक़ा हिफ्ज़ व तजवीद और तफ़्सीर कुरआन करीम 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

सम्पादकीय

जश्न-ए-आजादी मनाइए और इसकी कद्र (सम्मान) कीजिए

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी
अध्यक्ष, मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

अल्लाह तआला ने हर इंसान को आजाद पैदा फरमाया है। आजादी उसका अपना हक़ है। पैदाइशी तौर पर कोई भी शख़्स किसी का गुलाम नहीं है। हजरत उमर बिन खत्ताब रजियल्लाहु अन्हु, जो सबसे ज़्यादा सख़्त-गीर(कठोर), कवी-व-मतीन (मजबूत) और दीन के मामले में बेहद सख़्त थे, वे दूसरों को अपने अधीन करके उन पर सख़्ती करने या उन्हें गुलाम बनाने के लिए सख़्त नहीं थे, बल्कि लोगों को गुलामी से निकालने के लिए सख़्त थे। कोई किसी को गुलाम बना ले, यह उन्हें जरा भी पसंद नहीं था। इस मामले में वे इसलिए सख़्त थे कि कोई अपनी दौलत, सल्तनत, ताकत-व-दबदबा, जाह-ओ-मंसब और सख़्त-गीरी तथा दुनिया पर शासन करने के घमंड में किसी को नाजायज तौर पर गुलाम न बना ले। उनकी जिंदगी के बहुत से वाकिआत (घटनाएँ) और रोजमर्रा (दैनिक जीवन) के हालात बताते हैं कि वे किसी भी हालत में किसी की जेहनी, फिक्री, जिस्मानी या रूहानी गुलामी को पसंद नहीं करते थे, बल्कि उससे निजात दिलाकर ही दम लेते थे। उनके पेशरौ खलीफा हजरत अबू बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु भी अपनी कोमल स्वभाव और रहमदिली की वजह से किसी की मामूली-सी तहकीर और गुलामी को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। इसी तरह हजरत उमर रजियल्लाहु अन्हु अपने दीन और ईमान में बेहद सख़्त होने की वजह से मामूली ज़ुल्म और गुलामी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। आम इंसानों के अलावह गुलामों के साथ भी उनका यही रवैया था। हजरत बिलाल को सय्यिदना बिलाल कहते और असलम नामक गुलाम के साथ भी आका, हमपल्ला दोस्तों और साथियों जैसा बर्ताव करते। एक किस्सा, कमजोर रिवायत होने के बावजूद, मशहूर है कि उन्हीं के दौर में मिस्र के गवर्नर के साहबजादे ने एक किब्ती ईसाई लड़के पर मामूली ज़्यादती की और उसे हकीर समझा। तब हजरत उमर ने इसे गुलाम बना लेने के बराबर माना। किसी को कमतर समझकर उसके साथ मामूली-सी तहकीर- आमेजी करना, उस पर ज़ुल्म करना और अपने आपको ऊँचा और बड़ा समझना ही लोगों को गुलाम बनाना है। चुनाँचे आपने फौरन मिस्र के गवर्नर को तलब फरमाया। किब्ती ईसाई लड़के को हुक्म दिया कि वह खुले आम मिस्र के सबसे बड़े ओहदेदार और मुस्लिम हाकिम के साहबजादे को एक आम मुजरिम की हैसियत से उसी तरह तमाचा मारे, जैसे उसने उस गैर-मुस्लिम ईसाई लड़के को मारा था और जोश एवं गैज-ओ-गजब में उसे हकीर समझा था। उस मौके पर उन्होंने अपना मशहूर तारीखी जुमला फरमायाः ''तुमने लोगों को कब से गुलाम बना लिया, जबकि

उनकी माँओं ने उन्हें आजाद पैदा किया था'' यह जुमला आज तक आजाद कौमों के लिए याद किया जाता है और गुलामी की जंजीरों, तौक-व-सलासिल (जंजीरें) तथा बेड़ियों से कौमों को निजात दिलाने के फर्मूले के तौर पर दोहराया जाता है। चाहे आम तौर पर आजाद कौमों की गुलामी का मामला हो या आजादी के बेजा इस्तेमाल का, ताकतवर और कमजोर के बीच गुलामी और आकाईयत का मसला हो या जात-पात, जुगराफिया, रंग और नस्ल की बुनियाद पर एक-दूसरे के साथ गुलामों जैसा बर्ताव ये सभी गुलामी की बदतरीन शक्लें हैं, जो आजाद समाज और आजादी की फिजा में भी जारी रह सकती हैं।

आजादी इंसान की बुनियादी जरूरत और उसकी बड़ी नेमत है। जिस व्यक्ति या कौम को आजादी हासिल हो, उसे इसकी कद्र करनी चाहिए। आजादी केवल किसी दूसरे के शासन से मुक्ति का नाम नहीं, बल्कि अपने विचार, धर्म, संस्कृति और जीवन-मूल्यों के अनुसार सम्मान के साथ जीने का अधिकार भी है। हमारे देश ने १५ अगस्त १९४७ को लंबे संघर्ष और अनगिनत कुर्बानियों के बाद आजादी हासिल की। इस स्वतंत्रता के पीछे लाखों लोगों की मेहनत, त्याग, संघर्ष और बलिदान शामिल है। इसलिए हर नागरिक का फर्ज है कि वह आजादी की कद्र करे और देश की एकता, शांति तथा तरक्की में अपना योगदान दे।

असली आजादी केवल बाहरी बंधनों से मुक्त होना नहीं है। इंसान को अपने नफ्स, बुरी आदतों, लालच, घमंड और अन्याय से भी आजाद होना चाहिए। जो व्यक्ति अपनी इच्छाओं और बुरी आदतों का गुलाम बन जाए, वह बाहरी रूप से आजाद होकर भी वास्तव में आजाद नहीं कहा जा सकता। इसलिए आजादी का सही अर्थ है कि इंसान अपने अधिकारों के साथ अपनी जिम्मेदारियों को भी समझे, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करे और न्याय तथा सच्चाई का साथ दे।

किसी भी देश की वास्तविक ताक़त केवल उसकी दौलत, सेना या संसाधनों में नहीं होती, बल्कि उसके नागरिकों के चरित्र, ईमानदारी, एकता और आपसी सम्मान में होती है। अगर समाज में झूठ, भ्रष्टाचार, नफरत, अन्याय और स्वार्थ बढ़ जाएँ तो उसकी प्रगति रुक जाती है। इसके विपरीत, जब लोग ईमानदारी, मेहनत, भाईचारे और इंसाफ को अपनाते हैं तो देश मजबूत होता है।

हम हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं, स्वतंत्रता सेनानियों को याद करते हैं और देश के प्रति अपने प्रेम का इजहार करते हैं। लेकिन आजादी का सम्मान केवल एक दिन का जश्न नहीं होना चाहिए। हमें अपने रोजमर्रा के जीवन में भी देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए। कानून का पालन करना, सार्वजनिक संपत्ति की हिफाजत करना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना, शिक्षा को बढ़ावा देना और समाज में शांति बनाए रखना भी देशभक्ति का हिस्सा है।

भारत की स्वतंत्रता की कहानी

बड़ी कुर्बानियों से भरी हुई है। अलग-अलग धर्मों, क्षेत्रों और समुदायों के लोगों ने अपनी जान, माल और आराम की कुर्बानी दी। अनेक विद्वानों, उलेमा, समाज-सुधारकों और आम लोगों ने विदेशी शासन के खिलाफ आवाज उठाई। उन लोगों ने अपने परिवार, धन-दौलत और व्यक्तिगत आराम से बढ़कर देश और समाज की आजादी को महत्व दिया। कठिन परिस्थितियों, जेल, अत्याचार और अनेक परेशानियों के बावजूद उन्होंने अपने उद्देश्य से पीछे हटना स्वीकार नहीं किया।

कुरआन में ऐसे ईमान वालों की प्रशंसा की गई है जिन्होंने अल्लाह से किए अपने वादे को सच्चा कर दिखाया। उनमें कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपनी जान कुर्बान कर दी और कुछ अपने वचन पर आज भी दृढ़ हैं। यह हमारे लिए त्याग,दृढ़ता और वफादारी का बड़ा संदेश है। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में अनेक उलेमा और धार्मिक विद्वानों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शाह वलीउल्लाह देहलवी, शाह अब्दुल अजीज, शाह इस्माइल शहीद, सैयद अहमद शहीद और उनके बाद आने वाले अनेक विद्वानों ने समाज में जागरूकता पैदा की। उन्होंने लोगों को अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने, अपने अधिकारों को समझने और अपने दीन तथा नैतिक मूल्यों पर कायम रहने की प्रेरणा दी। उनके प्रयासों का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी था कि समाज में ज्ञान, सुधार और जागरूकता पैदा हो। बिहार में भी अनेक उलेमा और विद्वानों ने स्वतंत्रता और सामाजिक जागरूकता के लिए महत्वपूर्ण काम किया। पटना का सादिकपुर क्षेत्र इस सिलसिले में विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। यहाँ के अनेक विद्वानों और परिवारों ने स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लिया और कठिनाइयों का सामना किया। उनकी कुर्बानियाँ हमें यह संदेश देती हैं कि किसी बड़े उद्देश्य के लिए धैर्य, त्याग, एकता और निरंतर प्रयास आवश्यक है।

आजादी का अर्थ यह नहीं कि हम केवल अपने अधिकारों की बात करें। एक जिम्मेदार नागरिक अपने कर्तव्यों को भी समझता है। देश की एकता, अम्न और खुशहाली के लिए हर नागरिक को अपना योगदान देना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस केवल जश्न मनाने का अवसर नहीं, बल्कि अपने इतिहास को याद करने और अपनी जिम्मेदारियों को समझने का दिन है। हमें उन सभी लोगों की कुर्बानियों को याद रखना चाहिए जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना जीवन समर्पित किया। आइए, हम आजादी की क़द्र करें, देश की एकता और अम्न की हिफाजत करें, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करें और अपने देश की तरक्क़ी के लिए ईमानदारी से काम करें।

ऐ अल्लाह! हमें आजादी की सही कद्र करने का शऊर दे, हमारे असलाफ की कुर्बानियों से सबक लेने की तौफीक दे और हमारे मुल्क को अम्न, खुशहाली, एकता और तरक्क़ी अता फरमा। आमीन। यौम-ए-आजादी सबको मुबारक।

❑❑❑

नेक कामों के द्वारा अपने आप को जहन्नम से बचाओ

मौलाना शारिब सलफ़ी

सैय्यदना अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

क़यामत के दिन जहन्नम वालों में से उस व्यक्ति को लाया जाएगा जिसने दुनिया में सबसे अधिक ऐश व आराम की ज़िंदगी गुजारी होगी। फिर उसे जहन्नम में केवल एक बार डुबोया जाएगा और तुरंत निकाल लिया जाएगा। इसके बाद उससे पूछा जाएगा।

ऐ आदम के बेटे! क्या तुमने कभी कोई सुख और आराम देखा था? क्या कभी तुम्हें कोई नेमत और ऐश नसीब हुई थी?

वह कहेगाः

नहीं, ऐ मेरे रब! अल्लाह की क़सम, मैंने कभी कोई सुख और आराम नहीं देखा।

फिर आपने फरमायाः

इसके विपरीत जन्नत वालों में से उस व्यक्ति को लाया जाएगा जिसने दुनिया में सबसे अधिक कठिनाइयाँ, दुःख और परेशानियाँ झेली होंगी। उसे जन्नत में केवल एक बार ले जाया जाएगा। फिर उससे पूछा जाएगा।

ऐ आदम के बेटे! क्या तुमने कभी कोई तकलीफ देखी? क्या कभी तुम पर कोई कठिन समय आया?

वह कहेगाः

नहीं, ऐ मेरे रब! अल्लाह की कसम, मैंने कभी कोई दुख, तकलीफ या परेशानी नहीं देखी। (सहीह मुस्लिमः २८०७)

इसके बाद अल्लाह तआला फरमाते हैंः

ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ, जिसका ईंधन इंसान और पत्थर हैं। (सूरह अत-तहरीमः ६)

ज़रा ग़ौर कीजिए! अल्लाह तआला ने यह नहीं फरमाया कि ऐ बल्कि सीधे ईमान वालों से मुखातिब होकर फरमायाः

ऐ ईमान वालो! ऐ मुसलमानो! जहाँ तक हो सके, अपनी पूरी ताकत के साथ अपने आपको और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ।

अपने आपको जहन्नम से बचाना कितना ज़रूरी है, इसका अंदाज़ा इस हदीस से लगाइए। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

जहन्नम की आग से बचो, चाहे खजूर के एक टुकड़े का सदक़ा करके ही क्यों न हो। (सहीह अल-बुखारीः १४१७, सहीह मुस्लिमः १०१६)

अर्थात, जिस प्रकार भी संभव हो, छोटे या बड़े हर नेक अमल को अपनाइए और अपने आपको जहन्नम की आग से बचाने की कोशिश कीजिए।

❑❑❑

हर समय नबी सल्ल० पर दरूद भेजें

हम इस बात के इंकार करने वाले नहीं हैं कि नबी को याद न किया जाए और उन पर दरूद न भेजा जाए। बल्कि हर इंसान को चाहिए कि वह हर समय नबी पर दरूद भेजे और आपका जिक्र करे, क्योंकि अल्लाह तआला स्वयं इसका हुक्म देता हैः

इन्नल्लाह व मलाइकतहू युसल्लूना अलन-नबी, या अय्युहल्लजीना आमनू सल्लू अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा। (सूरह अल-अहजाबः ५६)

इस आयत से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नबी पर दरूद व सलाम भेजना चाहिए और आपका जिक्र करना चाहिए। लेकिन यह प्रमाण कहाँ मिलता है कि साल में किसी एक दिन को विशेष रूप से निर्धारित करके उसी दिन नबी की याद मनाई जाए? नबियों की सालगिरह मनाना, जुलूस निकालना, नारे लगाना, नबी का दामन नहीं छोड़ेंगे जैसी आवाजें बुलंद करना ये सब निराधार और गैर-शरई बातें हैं।

जब दामन पकड़ा ही नहीं, तो दामन छोड़ने की बात कैसे सही हो सकती है? दामन पकड़ने का वास्तविक अर्थ यह है कि जिस काम को अल्लाह के रसूल ने किया हो या करने का आदेश दिया हो, उसे किया जाए, और जिस काम से रोका हो, उससे बचा जाए।

प्रिय पाठकों! यदि ईद मिलादुन्नबी मनाना जायज होता, तो सबसे पहले अल्लाह के रसूल स्वयं हजरत आदम अलैहिस्सलाम का जश्न-ए-मिलाद मनाते। लेकिन आपकी पूरी पवित्र जीवन-यात्रा में न किसी उर्स का प्रमाण मिलता है और न किसी मिलाद की महफिल का।

जब हम सीरत का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि न इसे स्वयं नबी ने मनाया, न हजरत अबू बक्र सिद्दीक़, न हज़रत उमर फारूक़, न हज़रत उस्मान ग़नी, न हज़रत अली, न ताबेईन और न तबअ ताबेईन ने। संक्षेप में, सहाबा से लेकर इमामों तक किसी ने भी इसे नहीं मनाया। तो फिर हम जश्न-ए-मिलाद न मनाकर उन्हीं के समूह में क्यों न शामिल हो जाएँ?

यदि कोई यह समझे कि जश्न-ए-मिलाद न मनाने से आदमी काफ़िर हो जाएगा, तो (नऊज़ुबिल्लाह) क्या सभी सहाबा, ताबेईन, तबअ ताबेईन और दीन के इमाम काफिर थे जिन्होंने इसे नहीं मनाया?

इतिहास बताता है कि इसका प्रचलन सातवीं हिजरी शताब्दी में हुआ। यह यहूदियत, मजूसियत और पेट-परस्त मौलवियों की देन है। दुनिया का कोई भी आलिम कुरआन और हदीस से यह सिद्ध नहीं कर सकता कि दो ईदों के अलावा किसी तीसरी ईद का अस्तित्व है।

जब उनसे पूछा जाता है कि यह सब क्यों किया जाता है, तो वे कहते हैं कि इस तरह इकट्ठा होकर गैर-मुस्लिमों पर रोब और दबदबा कायम होता है। यदि यही उद्देश्य होता, तो क्या अल्लाह के रसूल को इसका खयाल नहीं आया होता, जबकि उस समय इसकी आवश्यकता कहीं अधिक थी?

इस्लाम जैसे पवित्र और स्वच्छ धर्म का इन खुराफात से कोई संबंध नहीं है। ये सभी कार्य बिदअत हैं, और बिदअत सबसे बड़ी गुमराही है। जैसा कि हजरत आयशा (रजि.) से रिवायत है कि नबी करीम ने फरमायाः

मन अहदसा फी अम्रिना हाजा मा लैसा मिन्हु फहुवा रद्द। (सहीह बुखारी)

अर्थातः जिसने हमारे दीन में ऐसी नई बात निकाली जो उसमें से नहीं है, वह अस्वीकार्य है।

एक दूसरी हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दीन में नई-नई बातें पैदा करने से बचो, क्योंकि दीन में पैदा की गई हर नई बात बिदअत है, हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम की ओर ले जाने वाली है।

हमारा कहना सिर्फ़ इतना है कि जश्न-ए-मिलाद मनाने वाले, इश्क-ए-रसूल और मुहब्बत-ए-रसूल का दावा करने वाले अपने ईमान और अपने अमल का स्वयं जायजा लें। रसूल की मुहब्बत ईमान का हिस्सा है और उसके बिना ईमान मुकम्मल नहीं होता।

सच्ची मुहब्बत यह है कि रसूल के आदेशों का पालन किया जाए और जिन बातों से उन्होंने रोका है, उनसे दूर रहा जाए। यही अल्लाह की मुहब्बत का भी अर्थ है कि उसके आदेशों का पालन किया जाए और जिन बातों से उसने रोका है, उनके निकट भी न जाया जाए।

नबी ने दीन में हर प्रकार की बिदअत से रोका है, इसलिए उनसे बचना चाहिए। इस्लाम के सभी अरकान पर अमल किया जाए, ईमान के मूलस्तंभ दिल में ढ़हों और किसी प्रकार का संदेह न रहे। यदि कोई व्यक्ति इन गुणों से युक्त है, तभी वह वास्तविक अर्थों में मोमिन है और उसके भीतर अल्लाह और उसके रसूल की सच्ची मुहब्बत है।

लेकिन अफसोस की बात यह है कि जब हम जश्न-ए-मिलाद मनाने वालों की सीरत और चरित्र को देखते हैं तो अधिकांश लोग व्यवहारिक जीवन में कमजोर दिखाई देते हैं। नमाज, रोजा, हज, जकात आदि की स्थिति संतोषजनक नहीं होती। कलिमा-ए-तौहीद की सही समझ भी नहीं होती, क्योंकि कलिमा-ए-तौहीद केवल अल्लाह की इबादत का आदेश देता है और उसके सिवा किसी के सामने शीश झुकाने से रोकता है।

इसके बावजूद कुछ लोग कब्रों पर माथा टेकते हैं, चादर चढ़ाते हैं, नजर-नियाज मानते हैं, तवाफ़ करते हैं, मुर्दों का माध्यम लेते हैं और कब्रों पर रौशनी करते हैं, जबकि इन कार्यों से रसूल ने मना किया था। इन्हीं कारणों से आपकी लड़ाई मक्का के मुशरिकों से हुई थी।

इन जुलूसों और महफिलों पर जो धन खर्च होता है, यदि उसे एकत्र करके किसी मदरसे को दे दिया जाए तो पूरे वर्ष के वेतन की समस्या हल हो सकती है, या कोई मस्जिद बन सकती है, या हजारों गरीब लड़कियों का विवाह कराया जा सकता है। यह कहीं अधिक पुण्य और सवाब का कार्य होगा।

शहर-शहर और गाँव-गाँव नारेबाजी करने से इस्लाम की गलत छवि प्रस्तुत होती है। इससे इस्लाम की बदनामी होती है, नेकनामी नहीं।

इतिहास के पन्ने पलटकर देखिए, कहीं भी इस प्रकार के जुलूस दिखाई नहीं देंगे। इतिहास के हर दौर में आपको अमल, चरित्र, सीरत और अच्छे व्यवहार की मिसालें मिलेंगी, ऊँचे-ऊँचे दावे नहीं।

इन्नल मुहिब्ब लि-मन युहिब्बु मुतीअ

अर्थातः सच्चा प्रेम करने वाला अपने प्रिय की आज्ञा का पालन करता है।

यदि वास्तव में आपके सीने में हजरत मुहम्मद मुस्तफा की मुहब्बत का दीपक जल रहा है, तो उसकी लौ को आज्ञापालन और फरमाबरदारी के तेल से और अधिक प्रज्वलित कीजिए। अन्यथा कुफ्र, शिर्क और बिदअत की तेज आँधी उसे बुझा देगी, और फिर उसे ढूँढ़ना कठिन हो जाएगा। अल्लाह तआला सभी मुसलमानों को सही समझ और दीन की बसीरत प्रदान करे। आमीन।

माता-पिता के अधिकार

अल्लाह रब्बुल आलमीन ने पवित्र कुरआन में अनेक स्थानों पर अपने अधिकार के साथ-साथ माता-पिता के अधिकारों का भी उल्लेख किया है और उन्हें पूरा करने का आदेश दिया है। इससे माता-पिता के अधिकारों का महत्व स्पष्ट होता है। अल्लाह तआला का फरमान हैः

अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। (सूरह अन-निसाः ३६)

एक दूसरी जगह पर अल्लाह तआला ने माता-पिता के अधिकारों को तफसील से इस तरह बयान किया हैः

तुम्हारे पालनहार ने आदेश दिया है कि उसके सिवा किसी की इबादत न करो और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुँच जाएँ, तो उन्हें उफ तक न कहो, न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे इज़्ज़त के साथ और नर्मी से बात करो। दया और विनम्रता के साथ उनके सामने झुके रहो और यह दुआ करते रहो ऐ मेरे पालनहार! उन दोनों पर दया कर, जैसे उन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की। (सूरह बनी इस्राईल अल-इस्रा)

यह कुरआन की अत्यंत व्यापक आयत है, जिसमें माता-पिता के अधिकारों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से स्पष्ट किया गया है। इसमें विशेष रूप से निम्न अधिकार बताए गए हैं

माता-पिता के साथ सदैव अच्छा व्यवहार करना।

विशेष रूप से उनकी बुढ़ापा में उनकी पूरी देखभाल करना।

बात और व्यवहार दोनों में उनके साथ सम्मान और कोमलता का व्यवहार करना तथा उन्हें उफ तक न कहना।

उनके लिए हमेशा भलाई और रहमत की दुआ करना।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि इन दोनों आयतों में अर्थों का एक विशाल संसार समाहित है। विशेष रूप से जैसे उन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की वाले शब्द माता-पिता के अधिकारों की अहमियत को अत्यंत संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली ढंग से उजागर करते हैं और मनुष्य को अपने बचपन तथा माता-पिता के कुर्बानी की याद दिलाते हैं।

हदीसों में माता-पिता के अधिकारः

जिस प्रकार पवित्र कुरआन में माता-पिता के अधिकारों पर बल दिया गया है, उसी प्रकार पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उनकी महत्ता को स्पष्ट किया है। हदीसों के विशाल संग्रह में अनेक रिवायतें मिलती हैं, जिनमें माता-पिता के अधिकारों का ज़िक्र है।

हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रजियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह से पूछाः

अल्लाह को सबसे अधिक प्रिय कौन-सा कर्म है?

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

समय पर नमाज़ अदा करना।

मैंने पूछा, उसके बाद?

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करना।

मैंने फिर पूछा, उसके बाद?

आप ने फरमायाः

अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। (सहीह मुस्लिम)

एक अन्य हदीस में रसूलुल्लाह से पूछा गयाः

सबसे अधिक अच्छे व्यवहार का हकदार कौन है?

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उत्तर दियाः

तुम्हारी माँ। फिर पूछा गयाः

उसके बाद कौन?

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः तुम्हारी माँ।

फिर पूछा गयाः उसके बाद कौन?

आप ने फ़रमायाः

तुम्हारी माँ।

फिर फरमायाः

उसके बाद तुम्हारे पिता, फिर तुम्हारे क़रीबी रिश्तेदार, जो जितना अधिक निकट हो। (सहीह मुस्लिम)

माता-पिता संतान के लिए अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेमत हैं। इस नेमत की दिल से क़द्र करनी चाहिए और उनकी हर संभव सेवा करके जन्नत का अधिकारी बनने का प्रयास करना चाहिए।

वे लोग अत्यंत बदनसीब हैं जो माता-पिता जैसी महान नेमत पाकर भी उनकी मदद करके अल्लाह की खुशनूदी और जन्नत प्राप्त नहीं कर पाते, बल्कि उनकी नाफ़रमानी और उन्हें कष्ट पहुँचाकर अल्लाह के गुस्सा व ग़ज़ब के मुस्तहिक बन जाते हैं।

हजरत अबू हुरैरा (रजियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमायाः

उस व्यक्ति की नाक धूल में मिल जाए, उसकी नाक धूल में मिल जाए, उसकी नाक धूल में मिल जाए।

सहाबा ने पूछाः

ऐ अल्लाह के रसूल! वह कौन व्यक्ति है? आप ने फरमायाः

वह व्यक्ति जिसने अपने माता-पिता या उनमें से किसी एक को बुढ़ापे की हालत में पाया, फिर भी उनकी सेवा करके जन्नत प्राप्त नहीं की। (सहीह मुस्लिमः २५५१)

(प्रेस रिलीज़)

रबीउल अव्वल १४४८ का चाँद नज़र नहीं आया

दिल्ली, १३ अगस्त २०२६

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' से जारी अखबारी बयान के अनुसार दिनांक २६ सफ़र १४४८ हिजरी अर्थात १३ अगस्त २०२६ जुमेरात को मग्रिब की नमाज़ के बाद अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में ''मर्कज़ी अहले हदीस रूयते हिलाल कमेटी दिल्ली'' की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई और रबीउल अव्वल के चाँद को देखने के सिलसिले में यथापूर्व देश के अधिकांश राज्यों की जमाअती इकाइयों के पदधारियों और समुदायिक संगठनों से फून के माध्यम से संपर्क किये गये जिसमें विभिन्न राज्यों से चाँद को देखने की प्रमाणित खबर नहीं मिली। इस लिये यह फैसला किया गया कि दिनाँक १४ अगस्त २०२६ जुमा के दिन सफ़र की ३०वीं तारीख होगी।

इस्लाम में शिक्षा का महत्व और महिलाओं की शिक्षा

आसिफ तन्वीर

इस्लाम ने शिक्षा को जितनी महत्ता और श्रेष्ठता प्रदान की है, उतनी शायद ही किसी अन्य धर्म ने दी हो। इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि हजरत मुहम्मद पर गार-ए-हिरा में जो पहली वही (ईश्वरीय संदेश) नाज़िल हुई, वह ज्ञान (इल्म) से संबंधित थी। यदि अल्लाह चाहता तो पहली वही इस्लाम और ईमान के किसी अन्य विषय पर भी उतार सकता था, लेकिन उसने ज्ञान की महत्ता और उपयोगिता को सामने रखते हुए अपने अंतिम नबी और रसूल को सबसे पहले शिक्षा की आवश्यकता से वाक़िफ़ कराया, ताकि उनके माध्यम से पूरी मानवता तक यह संदेश पहुँच जाए और लोग अधिक से अधिक ज्ञान के मोतियों से अपने दामन को भर सकें।

इस्लाम ने पुरुष और महिला दोनों को शिक्षा प्राप्त करने का आदेश दिया है। ज्ञान के मामले में किसी को किसी पर कोई विशेषाधिकार या भेदभाव प्राप्त नहीं है, क्योंकि ज्ञान वही प्रकाश है जिसके आने से अज्ञानता और पथभ्रष्टता का अंधकार दूर होने लगता है और समाज उन्नति की ओर अग्रसर होता है। यह बात सबको मालूम है कि समाज पुरुषों और महिलाओं दोनों से मिलकर बनता है। कोई भी राष्ट्र या समुदाय केवल एक वर्ग को शिक्षित बनाकर कभी सफल नहीं हुआ है और न ही भविष्य में उसके सफल होने की संभावना दिखाई देती है।

इसी कारण इस्लाम ने पुरुष और महिला दोनों के लिए शिक्षा के मार्ग को समान रूप से प्रशस्त किया, ताकि इस्लामी समाज हर दृष्टि से दूसरों के लिए आदर्श बन सके, उन्नति और विकास के सर्वोच्च शिखर तक पहुँच सके तथा धार्मिक और सांसारिक दोनों क्षेत्रों में कोई उसका मुकाबला न कर सके।

किन्तु अत्यंत दुःख की बात है कि कुछ लोग पूर्वाग्रह, संकीर्णता और नफ़रत की नज़र से इस्लाम की छवि को बिगाड़ने का प्रयास करते हैं और यह आरोप लगाते हैं कि इस्लाम महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने तथा घर की चारदीवारी से बाहर निकलने की अनुमति नहीं देता। यह आरोप पूरी तरह निराधार है। वास्तव में कुरआन और हदीस की स्पष्ट शिक्षाएँ महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हैं।

इतिहास और सीरत की पुस्तकों में अनेक उदाहरण मिलते हैं कि अल्लाह के रसूल महिलाओं की शिक्षा एवं प्रशिक्षण के लिए अलग-अलग सभाएँ आयोजित करते थे, उनके प्रश्नों और शंकाओं का व्यक्तिगत रूप से समाधान करते थे और उनकी शिक्षा का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। यही कारण है कि सहाबियात और उम्महातुल मोमिनीन (नबी की पवित्र पत्नियाँ) में ऐसी महान विदुषियाँ थीं जिन्होंने अपने ज्ञान और योग्यता से अनेक पुरुषों को भी प्रभावित किया तथा यह सिद्ध कर दिया कि महिलाएँ उतनी कमज़ोर नहीं हैं जितना उन्हें समझा जाता है।

रिश्वत देना और लेना, दोनों हराम हैं

इस्लाम ने रिश्वत लेने और देने, दोनों को हराम (निषिद्ध) ठहराया है और इससे बचने की सख़्त ताकीद की है। जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

और आपस में एक-दूसरे का माल नाजायज़ तरीके से मत खाओ, और न ही हाकिमों (अधिकारियों) को रिश्वत पहुँचाकर लोगों का माल अन्याय और जुल्म के साथ हड़पने की कोशिश करो, जबकि तुम जानते हो। हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने रिश्वत लेने वाले और रिश्वत देने वाले, दोनों पर लानत फरमाई है। (मुस्नद अहमद, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

रिश्वत हराम कमाई है। यह लोगों का माल नाजायज तरीके से खाना, जुल्म और सरकशी में सहयोग करना तथा इंसान की इज़्ज़त और शराफत को बर्बाद करने का दूसरा नाम है। रिश्वत समाज में बुराइयों, फसाद, नैतिक पतन, नफ्सानी ख़्वाहिशों को खुली छूट देने, धोखा धड़ी, जालसाजी, सत्ता के दुरुपयोग और व्यवस्था को छलने का माध्यम बनती है। इसके कारण समाज की भलाई और न्याय व्यवस्था प्रभावित होती है, जुल्म और भ्रष्टाचार बढ़ता है तथा गरीबी, बदहाली और बदकिस्मती फैल जाती है। इसलिए इस्लाम ने रिश्वत को हराम घोषित किया है, यहाँ तक कि यदि कोई इन्हीं उद्देश्यों से कपड़े आदि का उपहार भी दे, तो वह भी स्वीकार्य नहीं है। सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में हजरत अबू हमीद साअदी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कबीला असद के एक व्यक्ति, जिसे इब्न लुत्बिय्या (या इब्न तनबिय्या) कहा जाता था, को ज़कात वसूलने के लिए नियुक्त किया। जब वह वापस आया तो उसने कहा, यह माल आप लोगों का है और यह मुझे उपहार में दिया गया है। यह सुनकर नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मिम्बर पर खड़े हुए, अल्लाह की हम्द व सना बयान की और फरमायाः

उस कर्मचारी का क्या हाल है जिसे मैं किसी काम पर नियुक्त करता हूँ, फिर वह आकर कहता है कि यह माल आपका है और यह मुझे उपहार में मिला है? अगर वह अपने पिता या माता के घर बैठा रहता, तो क्या उसे यह उपहार मिलता या नहीं? फिर आपने फरमायाः उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है! तुममें से जो व्यक्ति भी सरकारी माल में से कुछ नाजायज़ लेगा, वह क़ियामत के दिन उसे अपनी गर्दन पर उठाए हुए आएगा। यदि वह ऊँट होगा तो वह चिंघाड़ रहा होगा, यदि गाय होगी तो रंभा रही होगी और यदि बकरी होगी तो मिमिया रही होगी।

इसके बाद आपने अपने दोनों हाथ इतने ऊँचे उठाए कि आपकी बगलों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी और दो बार फ़रमायाः ऐ अल्लाह! क्या मैंने तेरा संदेश पहुँचा दिया?

इसी प्रकार हजरत बुरैदा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमायाः जिस व्यक्ति को हम किसी कार्य पर नियुक्त करें और उसके लिए उसका वेतन निर्धारित कर दें, फिर वह अपने निर्धारित वेतन से अधिक कुछ ले, तो वह गुलूल (सरकारी माल में खियानत) है। (अबू दाऊद)

रिपोर्टः डा. मुहम्मद शीस इदरीस तैमी, संयोजक, संगोष्ठी

भव्य राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ''स्वतंत्रता के संघर्ष में पूर्वजों की कुर्बानियाँ देश और समाज के निर्माण एवं विकास के लिए आदर्श'' ८०वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भव्य ध्वजारोहण समारोह का आयोजन

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के मार्गदर्शन और प्रबंधन में देश, समाज और संगठन के प्रमुख विद्वानों, मदरसों एवं आधुनिक विश्वविद्यालयों के शिक्षकों तथा बुद्धिजीवियों के महत्वपूर्ण व्याख्यान आयोजित किए गए। स्वतंत्रता के संघर्ष में हमारे पूर्वजों के त्याग और बलिदान को याद किया गया तथा स्वतंत्रता की इस महान विरासत को सुरक्षित रखने, उसके दायित्वों को पूरा करने और नई पीढ़ी को देश के स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से परिचित कराने पर विशेष जोर दिया गया। साथ ही देश में पारंपरिक सहिष्णुता, सांप्रदायिक सद्भाव, एकता, राष्ट्रीय एकजुटता और आपसी भाईचारे को मजबूत करने का आह्वान किया गया।

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के तत्वावधान में १५ अगस्त २०२६ को ८०वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, नमाज-ए-मगरिब के बाद, अहले हदीस काम्प्लेक्स, ओखला, नई दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद में ''स्वतंत्रता के संघर्ष में पूर्वजों की कुर्बानियाँ रू देश और समाज के निर्माण एवं विकास के लिए आदर्श'' विषय पर एक भव्य राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य विषय के अंतर्गत विभिन्न उप-विषयों पर देश, समाज और संगठन के प्रमुख विद्वानों, मदरसों एवं आधुनिक विश्वविद्यालयों के शिक्षकों तथा बुद्धिजीवियों ने महत्वपूर्ण व्याख्यान दिए। अनेक मूल्यवान शोध-पत्र प्रस्तुत किए गए और वक्ताओं ने अपने विचार एवं अनुभव भी साझा किए। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय जमीयत अहले हदीस हिंद के सम्मानित अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि देश का हर व्यक्ति यह जानता है कि हमें स्वतंत्रता कितनी बड़ी कुर्बानियों, रक्तरंजित परिस्थितियों और कठिन दौर से गुजरने के बाद मिली है। हमारे पूर्वजों ने अपने प्राणों की आहुति दी, कठिनाइयाँ सहीं और फाँसी के फंदे तक का सामना किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के उस कठिन इतिहास का थोड़ा-सा भी एहसास दिल को झकझोर देता है और आँखों में आँसू ला देता है।

उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास से परिचित कराना आवश्यक है, ताकि वह स्वतंत्रता संग्राम तथा देश और समाज के निर्माण के लिए उनके त्याग और बलिदान को समझ

सके। हमें स्वतंत्रता की इस महान नेमत की कद्र करनी चाहिए और इस अमूल्य विरासत की रक्षा करना अपना दायित्व समझना चाहिए।

उन्होंने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि आजादी इंसान और देश के लिए सबसे बड़ी नेमत के साथ-साथ सबसे बड़ी दौलत भी है। इसके बगैर इंसान कुछ भी नहीं है। लेकिन याद रखें कि आजादी का हरगिज यह मतलब नहीं है कि आपके पास लाठी है, तो उसे जहाँ चाहें और जैसे चाहें घुमाते फिरें। बल्कि आपकी लाठी सामने वाले की नाक तक पहुँचने से पहले ही आपकी आजादी को खघ्म कर देती है। उन्होंने आगे कहा कि ''पेदरम सुल्तान बूद'' इसलिए नहीं कहा जाता कि हम अपने बाप-दादा पर फख्र करें, बल्कि इसलिए कहा जाता है कि हम उनके नक़्श-ए-कघ्दम पर चलें। जब उनके बीच किसी ने तफरीक पैदा करने और किसी तरह का मजहबी, जुगराफियाई या लिसानी इख़्तिलाफ (भाषाई मतभेद) पैदा करने की कोशिश की, तो कोई सर सैयद की तरह खड़ा हो गया और कहने लगा कि क्यों बँट रहे हो? भारत एक खूबसूरत दुल्हन है और तुम्हारी खींचातानी में अगर उसकी बेहद खूबसूरत आँखें प्रभावित होती हैं, तो यह दुल्हन भेंगी और कानी हो जाएगी। यही वे लोग थे जिन्होंने हिंदू-मुस्लिम, सिख-ईसाई इत्तिहाद और भाई-भाई के नारे को अमली जामा पहनाया तथा नफरत के हर फितने को मिटाया। तब जाकर हमें सुब्ह-ए-आजादी नसीब हुई।

अमीर-ए-मुहतरम ने आगे कहा कि जब तक हम यह नहीं जानेंगे कि हमारे असलाफ ने किन लोगों के ख़िलाफ जंग लड़ी और आजादी हासिल की, तब तक हम टकराव और तकसीम की जिल्लत से नहीं बच पाएँगे। बंगाल से कौन लोग उठे थे, फराइजी तहरीक कहाँ से उठी और कहाँ तक पहुँचीं यह सब हमारे नौजवानों और बच्चे-बच्चे को जानने की जरूरत है। ख़ास तौर पर ''तहरीक-ए-शुहदा'' को याद रखना होगा। मौलाना अबुल कलाम आजाद रहमतुल्लाह अलैह के अनुसार, आज अगर कोई फरिश्ता आसमान की बुलंदियों से उतर आए और दिल्ली की कुतुब मीनार पर खड़े होकर यह ऐलान करे कि २४ घंटे के अंदर स्वराज मिल सकता है, बशर्ते हिंदुस्तान हिंदू-मुस्लिम इत्तिहाद से दस्तबरदार हो जाए, तो मैं स्वराज से दस्तबरदार हो जाऊँगा, मगर हिंदू-मुस्लिम इत्तिहाद से दस्तबरदार नहीं होऊँगा। क्योंकि अगर स्वराज मिलने में देर हुई तो यह सिर्फ हिंदुस्तान का नुकसान होगा, लेकिन अगर हमारा इत्तिहाद ख़त्म हो गया तो यह पूरी इंसानियत का नुक़सान होगा। याद रखें कि हमारे अजीम लीडर गाँधी जी, जो तकसीम के सख़्त मुखालिफ थे, बाद में तकसीम के लिए तैयार हो गए, लेकिन मौलाना अबुल कलाम आजाद आख़िरी वक्त तक इसके लिए तैयार नहीं थे।

मौलाना सलफी ने कहा कि आजादी हमारे असलाफ की दी हुई अमानत है। यह एक नेमत है, जिसकी क़द्रदानी और जिस आईन को हमारे असलाफ ने हमें दिया है, उसकी पासदारी तथा अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने की जरूरत है। मुल्क-ओ-मिल्लत और इंसानियत की खिदमत ही आजादी का सिला

और असलाफ की कुर्बानियों की क़द्रदानी है। अपने मुल्क से वफादारी हमारा दीन सिखाता है। इसलिए हमें अपने मुल्क के अम्न-ओ-अमान की बक़ा और तामीर-ओ-तरक्क़ी के लिए दुआ भी करते रहना चाहिए।

अमीर-ए-मुहतरम ने अपने खिताब में जोर देकर कहा कि वतन से मोहब्बत फितरी है और इस्लाम तथा उसकी रोशन तालीमात ने वतन से मोहब्बत को बहुत अहमियत दी है, जिसे आपने आयात-ओ-अहादीस, अरबी अशआर और अकवाल के जरिए वाजेह किया। आपने इस मौक़े पर तमाम देशवासियों को यौम-ए-आजादी की मुबारकबाद दी और उलमा- ए-किराम, दानिशवरान-ए-अजीम, हाजिरीन और मीडिया के लोगों का ख़ास तौर पर शुक्रिया अदा किया।

इफ्तिताही ख़िताब करते हुए मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के नाजिम-ए-उमूमी मौलाना मुहम्मद हारून सनाबली ने अमीर-ए-मुहतरम की मसाई-ए-जमीला का खूबसूरत अंदाज में जिक्र किया और कहा कि वतन-ए-अजीज बेशुमार कुर्बानियों के बाद आजाद हुआ। जद्द-ओ-जहद-ए-आजादी में हिस्सा लेने वालों को याद करना हमारे जागरूक होने की दलील है। उन्होंने कहा कि तारीख इस बात की गवाह है कि उलमा-ए-अहल-ए-हदीस आजादी की तहरीक चलाने में पेश-पेश थे। उलमा ही ने अवाम के अंदर जद्द-व-जहद-ए-आजादी की दीया जलाई। उन्होंने कहा कि विद्वानों का मनोबल तोड़ने के लिए अंग्रेजों ने उनकी रचनाओं और पुस्तकालयों को आग के हवाले कर दिया। आपने अमीर-ए-मुहतरम की बेहतरीन कियादत में जमीयत की शानदार खिदमात का भी जिक्र किया।

इससे पहले नाजिम-ए-जलसा डाक्टर मुहम्मद शीस इदरीस तैमी ने सभी वक्ताओं और शिर्कत करने वालों का मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद और उसके जिम्मेदारान की तरफ से दिल की गहराइयों से इस्तिकबाल किया। उन्होंने जद्द-व-जहद-ए-आजादी के मुख़्तलिफ मराहिल का जिक्र करते हुए मुजाहिदीन-ए-आजादी की जद्द-व-जहद का इजमाली (संक्षेप) तौर पर बयान किया और कहा कि आज के इस अजीमुश्शान सिम्पोजियम का थीम यही है कि मुल्क-ओ-मिल्लत की तामीर-ओ-तरक्क़ी के लिए असलाफ की कुर्बानियों को रोल मडल मानते हुए हमें अपने हिस्से की जिम्मेदारी अदा करनी चाहिए।

प्रसिद्ध विद्वान एवं शोधकर्ता मौलाना सलाहुद्दीन मकबूल मदनी ने ''जद्द-व-जहद-ए-आजादी में उलमा-ए-अहले हदीस का किरदार'' के मौजू पर बातचीत करते हुए असलाफ की कुर्बानियों का तफसीली जिक्र किया और खास तौर पर यह शेर पढ़ाः

''खून-ए-दिल देकर सँवारा है रुख-ए-बर्ग-ए-गुलाब,
हमने गुलशन के तहफ्फुज की क़सम खाई है।''

मौलाना ने सिम्पोजियम के आयोजन को मुबारक कदम बताया और नेमत-ए-आजादी की कद्र करने की तलकीन की।

पद्मश्री प्रोफेसर अख़्तरुल वासे, प्रोफेसर एमेरिटस, जामिया

मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली ने अपने तअस्सुराती कलिमात में जिम्मेदारान-ए-जमीयत, खास तौर पर अमीर-ए-जमाअत मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को मुबारकबाद देते हुए कहा कि इस तरह के मौजू पर सिम्पोजियम का आयोजन वक्त की अहम जरूरत है। उन्होंने कहा कि उलमा-ए-सादिकपुर की कुर्बानियों को फरामोश नहीं किया जा सकता। जिन मदरसों को आज आतंकवाद का अड्डा कहा जा रहा है, यही वे मदरसे हैं जिन्होंने अंग्रेजों से मुल्क को आजादी दिलाने के लिए जद्द-ओ-जहद की। उन्होंने कहा कि इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि यह उलमा का कारनामा है कि उन्होंने मुल्क को आजाद कराने के साथ-साथ मजहब का तहफ्फुज भी किया। प्रोफेसर साहब बीमारी और कमजोरी के बावजूद विषय और कार्यक्रम के प्रति अपनी रुचि और लगाव के कारण इस स्थिति में भी संगोष्ठी में उपस्थित हुए। अल्लाह तआला उन्हें पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे। आमीन।

मौलाना अब्दुल अहद मदनी, उस्ताद अल-मअहद -उल-आली लिल-तख़स्सुस फिद-दिरासातिल इस्लामिया ने ''तहरीक-ए-शहीदैनः जद्द-ओ-जहद-ए-आजादी का नक़्श-ए-अव्वलीन'' के मौजू (विषय) पर पुरमग़ज ख़िताब किया और तहरीक-ए-शुहदा पर तफसील से रौशनी डाली।

अल इंडिया मुस्लिम मजलिस-ए-मुशावरत के सदर फिरोज अहमद एडवोकेट ने अपने तअस्सुरात में सिम्पोजियम के आयोजन पर मर्कज़ी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर-ए- मुहतरम की सताइश की और कहा कि आजादी को बरकरार रखने के तरीक-ए-कार पर गौर करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मदरसों का मुल्क को आजादी दिलाने और तालीम के फरोग में अहम किरदार रहा है। आजादी एक क़ाबिल-ए-क़द्र नेमत है, जिसका तहफ्फुज जरूरी है।

मौलाना अताउर्रहमान क़ासमी, सदर शाह वलीउल्लाह इंस्टीट्यूट, दिल्ली ने सिम्पोजियम के आयोजन पर मर्कज़ी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को मुबारकबाद दी। उन्होंने कहा कि १८५७ या उससे पहले की तहरीक-ए-आजादी पर गौर किया जाए तो एक बात साफ तौर पर सामने आती है कि यह तहरीक किसी ख़ास तबक़े या मजहब की तहरीक नहीं थी, बल्कि यह हिंदू-मुस्लिम इत्तिहाद की तहरीक थी। सबने मिलकर यह फैसला किया था कि देश को हर सूरत में अंग्रेजों से आजाद कराना है।

जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के असिस्टेंट सेक्रेटरी मौलाना रिजवान रफीकी ने अपने तअस्सुराती कलिमात (विचार) में कहा कि हमारे लिए यह बड़ी ख़ुशी की बात है कि हम जंग-ए-आजादी के असली हीरो को याद कर रहे हैं। उन्होंने सिम्पोजियम के आयोजन पर मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के जिम्मेदारान को मुबारकबाद देते हुए कहा कि आजादी हमारे असलाफ की जद्द-ओ-जहद से इबारत है। जरूरत इस बात की है कि असलाफ के इन कारनामों को नई नस्ल के सामने आसान अंदाज में पेश किया जाए।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया नई दिल्ली के शोबा-ए-उर्दू के प्रोफेसर नदीम अहमद ने सिम्पोजियम के आयोजन पर अमीर-ए-जमीयत

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को मुबारकबाद दी और इसे वक़्त की जरूरत क़रार देते हुए ''नेमत-ए-आजादी और उसके तकाजे'' के मौजू पर पुरमग़ज़ गुफ्तगू की। उन्होंने आजादी का सही मतलब वाजेह किया और बताया कि आजादी के क्या-क्या तक़ाज़े हैं तथा इसकी क़द्र करने पर जोर दिया।

मौलाना अजहर मदनी, डायरेक्टर इकरा इंटरनेशनल स्कूल, जैतपुर, नई दिल्ली ने ''जद्द-ओ-जहद-ए-आजादी में उलमा-ए-सादिकपुर की कुर्बानियाँ'' के मौजू पर खिताब करते हुए कई तारीखी किताबों के हवाले से कहा कि आजादी की तहरीक में उलमा-ए-अहल-ए-हदीस पेश-पेश रहे हैं। खास तौर पर मुल्क को आजादी दिलाने में उलमा-ए-सादिकपुर का बहुत अहम और नाकाबिल-ए-फरामोश किरदार रहा है। नई नस्ल को इससे रूबरू कराने, इसकी कद्र-ओ-कीमत बताने और मुल्क की तामीर-ओ-तरक़्क़ी के लिए हर वक़्त तैयार करते रहने की जरूरत है।

मौलाना अब्दुल गनी मदनी, उस्ताद अल-मअहद अल-आली लिल-तखस्सुस फिद-दिरासातिल इस्लामिया ने ''तहरीक-ए-आजादी में मदारिस-ए-इस्लामिया का किरदार'' के मौजू पर इजहार-ए-खयाल करते हुए कहा कि शाह अब्दुल अजीज रहमतुल्लाह अलैह के अंग्रेजों के खिलाफ जिहाद का फतवा देने के बाद लोगों के अंदर मुल्क को आजादी दिलाने के सिलसिले में एक वलवला अंगेज पैगाम पहुँचा और पूरे हिंदुस्तान के लोग अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए कमरबस्ता हो गए।

दिल्ली सरकार के एडवोकेट पैनल के सदस्य अधिवक्ता रईस अहमद ने ''इंसानी जिंदगी में अम्न-ओ-कानून की पासदारी'' के उनवान पर इजहार-ए-खयाल करते हुए कहा कि मुसलमान बहुत पुरअम्न और अम्न-पसंद हैं। हिंदुस्तान के उलमा मुबारकबाद के मुस्तहिक हैं कि उन्होंने मुल्क में हालात को खराब होने नहीं दिया।

डाक्टर जुनैद हारिस, उस्ताद -ए-जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली ने ''कौमी यकजहती व फिरकावाराना हम-आहंगी का फरोग वक़्त की बड़ी जरूरत'' के मौजू पर खिताब करते हुए जमीयत अहले हदीस हिंद को किताब- ओ-सुन्नत का अमीन करार दिया। उन्होंने कहा कि जमीयत और जमाअत से वाबस्ता लोग फिरकावारियत के खिलाफ हमेशा सीना-सिपर रहे हैं। उन्होंने इतने अहम मौजू पर सिम्पोजियम कराने पर मर्कजी जमीयत को मुबारकबाद दी और कहा कि हमारे असलाफ ने फिरकावाराना हम-आहंगी की बका के लिए जंग लड़ी।

प्रोफेसर मजहर -उल- हक सलफी, उस्ताद-ए-जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी ने ''आजादी का तहफ्फुजें खुशहाली और पुरअम्न बका-ए-बाहमी का जामिन'' के मौजू पर इजहार-ए-खयाल किया। उन्होंने इतने अहम मौजू पर सिम्पोजियम के आयोजन पर अमीर-ए-जमाअत को मुबारकबाद देते हुए कहा कि हक़ीक़ी आजादी का मतलब यह है कि इंसान अपने हुकूक से आगाह हो और दूसरे के हुकूक का भी ख़याल रखे। खुशहाली और पुरअम्न

बक़ा-ए-बाहमी आजादी के बगैर मुमकिन नहीं है, इसलिए इसकी क़द्र करनी चाहिए।

हाफिज शकील अहमद मेरठी, पूर्व अमीर प्रांतीय जमीयत अहल-ए-हदीस दिल्ली ने अपने ताअस्सुरात पेश करते हुए सिम्पोजियम के आयोजन पर मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के अमीर-ए-मुहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी को मुबारकबाद दी और तारीख़ी वाकिआत की रोशनी में जंग-ए- आजादी में अहल-ए-हदीस उलमा के नुमायाँ किरदार का जिक्र किया तथा आजादी की अमानत का पास-ओ-लिहाज रखने की ताकीद की।

मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के नायब नाजिम हाफिज मुहम्मद यूसुफ ने अपने ख़िताब में कहा कि हिंदुस्तान के मुसलमानों ने मुत्तहिद होकर यह फैसला किया कि अब हमें यहीं मरना और जीना है। आज फिर जरूरत है कि कोई अबुल कलाम आजाद पैदा हो, जो हमारी रहनुमाई करे और हमें जेहनी गुलामी से आजाद कराए।

पूर्व प्रिंसिपल अल-मअहद -उल-आली मौलाना मुहम्मद मुस्तक़ीम सलफी ने अपने ताअस्सुरात का इजहार करते हुए कहा कि मुसलमानों पर मुल्क से बेवफाई के इल्जाम की कोई हकीकत नहीं है। मुसलमानों के अंदर वतन से मोहब्बत का जज़्बा फितरी तौर पर मौजूद है। उन्होंने कहा कि सिम्पोजियम के आयोजन पर मरकजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद की क़ियादत मुबारकबाद की मुस्तहिक है।

इस सिम्पोजियम का आगाज हाफिज अरमगान की तिलावत-ए-कलाम-ए-पाक से हुआ। इसमें दिल्ली और आसपास के इलाकों के इमाम, मुतवल्लियान, मदरसों और असरी जामिआत के असातिजा व तलबा, सहाफी हजरात के अलावा अवाम-व-खवास ने बड़ी तादाद में शिर्कत की। समय की कमी के कारण प्रोफेसर साहब तथा अन्य अनेक लेखकों और सम्मानित अतिथियों के विचार एवं वक्तव्य प्रस्तुत नहीं किए जा सके। इसके लिए खेद व्यक्त करते हुए सभी का धन्यवाद किया गया। इसके बाद देश, समाज, मानवता, स्वतंत्रता तथा स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों, वीरों और सेनानियों के लिए दुआ की गई और कार्यक्रम के सफलतापूर्वक संपन्न होने की घोषणा की गई। इस प्रकार सभा का समापन अत्यंत सुंदर और भावपूर्ण वातावरण में हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि इसी दिन केंद्रीय जमीयत अहले हदीस हिंद के तत्वावधान में अहले हदीस काम्प्लेक्स, ओखला में संचालित उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान अल-मअहद -उल-आली लिल-तखास्सुस फिद-दिरासातिल इस्लामिया में सुबह ६ बजे सम्मानित अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी हफिजहुल्लाह के हाथों ध्वजारोहण का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के शिक्षकों और विद्यार्थियों, जमीयत के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं तथा अन्य उपस्थित लोगों को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महत्वपूर्ण और सारगर्भित संबोधन दिया। उन्होंने देश के सभी नागरिकों और अपने प्यारे देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई दी।

❑❑❑

मर्कज़ी जमीअत की प्रेस रिलीज़

मध्य प्रदेश के सूबाई जमीअत अहले हदीस के पूर्व नाजिम और मशहूर दीनी, मिल्ली और अदबी शख्सियत तथा अनुभवी शायर मौलाना उबैदुर्रहमान वफा सिद्दीकी का इंतिकाल कौमी व मिल्ली ख़सारा

दिल्लीः ३१ जुलाई २०२६,

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने मध्य प्रदेश के सूबाई जमीअत अहले हदीस के पूर्व नाजिम और मशहूर दीनी, मिल्ली और अदबी शख्सियत तथा अनुभवी शायर मौलाना उबैदुर्रहमान वफा सिद्दीकी साहब के इंतिकाल पर गहरे रंज-ओ-अफसोस का इजहार किया है और उनकी मौत को मुल्क-ओ-मिल्लत तथा जमाअत का बड़ा खसारा करार दिया है।

अमीर-ए-मुहतरम ने कहा कि मौलाना वफा सिद्दीकी साहब निहायत शरीफ, खलीक-ओ-मिलनसार, मेहमान-नवाज तथा कौमी, मिल्ली और जमाअती जज़्बे से सरशार थे। आप अल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के रुक्न-ए-तासीसी, आल इंडिया मिल्ली काउंसिल के रुक्न-ए-मजलिस-ए-आमिला और कई दूसरे इदारों के रुक्न व जिम्मेदार रहे। आपका आबाई वतन आगरा था, लेकिन भोपाल में अपने खानदान के साथ स्थायी तौर पर कयामत इख्तियार कर ली थी। आपका शुमार भोपाल के मुअज़्जिजीन में होता था और मिल्ली हल्के में भी काफी मकबूल थे। आप तजुर्बेकार शायर और अदीब थे। अफसोस कि ३१ जुलाई २०२६ को सुबह लगभग १० बजे, लगभग ६० वर्ष की उम्र में, तवील अलालत (बीमारी) के बाद दाई-ए-अजल को लब्बैक कह गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

आपकी शायरी के चार मजमूए (संग्रह) ''तार पैरहन'', ''नक़्श-ए-वफा,''ताबिंदा नक़्श "और "सारे जहाँ से अच्छा" प्रकाशित हुए। बुनियादी तौर पर आप गजल के शायर थे, परंतु नज़्में भी लिखते थे। मर्कजी जमीअत अहले हदीस हिंद की कई आल इंडिया कान्फ्रेंसों में आपने खूबसूरत नज़्में पेश कीं। मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी, अल्लामा इकबाल अकादमी, कहकशाँ-ए-अदब आदि इदारों ने आपकी अदबी खिदमात के एतिराफ में आपको एजाजात से नवाजा था।

आप निःसंतान थे। आपकी पत्नी का कई साल पहले इंतिकाल हो चुका था। पसमांदगान(परिजनों) में एक भाई जनाब अजीजुर्रहमान सिद्दीकी साहब, दो बहनें और कई भतीजे-भतीजियाँ तथा भाँजे-भाँजियाँ हैं।

प्रेस रिलीज के अनुसार, उनकी नमाज-ए-जनाजा उसी दिन बाद नमाज-ए-अस्र, शाम ४: १५ बजे, जामे मस्जिद अहले हदीस, न्यू कबाड़ खाना, भोपाल में अदा की गई। अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, बशरी लगजिशों से दरगुजर फरमाए, दीनी व मिल्ली खिदमात को शरफ-ए-कबूल बख्शे, जन्नतुल-फिरदौस का मकीन बनाए और पसमांदगान को सब्र-ए-जमील की तौफीक अता फरमाए। आमीन।

प्रेस रिलीज के अनुसार, मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के दूसरे जिम्मेदारान और कारकुनान ने भी मौलाना के इंतिकाल पर गहरे रंज-ओ-अफसोस का इजहार किया है और उनकी मगफिरत तथा

बुलंदी-ए-दरजात की दुआ की है।

मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद का उच्चस्तरीय राहत दल, प्रांतीय जमीयत अहले हदीस असम के साथ असम के सैलाब-प्रभावित इलाकों में

७ अगस्त २०२६

मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद का एक उच्चस्तरीय राहत दल, अमीर-ए-मुहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी और नाजिम-ए-उमूमी मौलाना मुहम्मद हारून सनाबली की कियादत में असम के दौरे पर है। यह जानकारी मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस की ओर से जराए-इबलाग के नाम जारी एक बयान में दी गई।

प्रेस रिलीज के अनुसार, ६ अगस्त २०२६ को मर्कजी उच्चस्तरीय राहत दल ने प्रांतीय जमीयत अहल-ए-हदीस असम के अमीर मौलाना हिफ्जुर्रहमान मदनी साहब की रहनुमाई और मौलाना अब्दुल हकीम, नायब नाजिम प्रांतीय जमीयत अब्दुल वहाब, खाज़िन प्रांतीय जमीयत मौलाना अब्दुल गफूर, अमीर जिलई जमीयत चरांग शेर अली खान, नायब अमीर कामरूप मौलाना मुफीदुल इस्लाम और नायब नाजिम जिलई जमीयत अहल-ए- हदीस गोलपाड़ा, अल्फ अली, दरंग आदि की मईयत (साथ) में असम के सैलाब-प्रभावित जिलों में से सबसागर जिले के मुख़्तलिफ मकामात, मसलन ढीला पाड़ा, नेपाली कोठे, बैत पारी, माजी गाँव आदि का दौरा किया।

दल ने वहाँ के हालात का जायजा लिया और प्रभावित लोगों की पूछ-ताछ की। चूँकि कुछ जगहें पूरी तरह तबाह हो गई हैं और लोगों का सब कुछ सैलाब में बह गया है, यहाँ तक कि खाना पकाने और खाने-पीने के लिए बर्तनों की भी सख़्त जरूरत है, इसलिए मर्कजी राहत दल ने प्रभावित लोगों के बीच गैस चूल्हा, देगची, प्लेट, गिलास, जग, मग, गमला, लाइटर, रेगुलेटर, कुंडा आदि सामान तक़्सीम किया। एक कैंप में खाने का इंतिजाम भी किया गया।

वाजेह रहे कि आज भी मरकजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद का यह राहत दल दूसरे सैलाब-प्रभावित इलाकों के दौरे पर है, जहाँ हालात का जायजा लिया जा रहा है और प्रभावित लोगों के बीच राहत सामग्री की तक़्सीम का सिलसिला जारी है। बाद में सैलाब प्रभावितों की बाजआबादकारी का काम भी प्रांतीय जमीयतों और मोहसिनीन के तआवुन से हिकमत-ए-अमली तय करके शुरू किया जाएगा, इंशाअल्लाह।

प्रेस रिलीज के अनुसार, सैलाब की कहर-सामानी के नतीजे में पैदा हुई उनकी (स्थिति) सूरतेहाल और प्रभावित लोगों की बदहाली को देखते हुए मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के अमीर-ए-मुहतरम ने अवाम-व-खवास से अपील की है कि सैलाब प्रभावितों की दिल खोलकर मदद करें। मरकजी जमीयत अपनी रियासती जमीयत की रहनुमाई में प्रभावित लोगों की राहत-रसानी और बाजआबादकारी के लिए पुरअज़्म है।

असम सैलाब प्रभावितों की पुनर्वास का मरहला तवज्जो और मदद का मोहताज

मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के उच्चस्तरीय राहत दल के तीन दिवसीय दौरे से वापसी पर दल के प्रतिक्रियाएँ

नई दिल्ली, ८ अगस्त २०२६

असम में भारी बारिश और सैलाब की तबाही के नतीजे में हुए जानी-व-माली नुकसान तथा सड़कों, मकानों, मवेशियों और फसलों की तबाही-बर्बादी का मुशाहिदा करके दिली सदमा पहुँचा। इससे अंदाजा हुआ कि हुकूमत और तंजीमों की

लगातार कोशिशों के बावजूद सैलाब प्रभावितों की बाजआबादकारी (पुनर्वास) में काफी वक्त और सरमाया दरकार होगा। वहाँ बाढ़ की विनाशकारी स्थिति ने जनजीवन को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर दिया है। लेकिन यह देखकर खुशी हुई कि हुकूमती इमदाद के अलावा सूबा-व-बैरून-ए-सूबा की कई फलाही तंजीमें भी राहत के कामों में सक्रिय हैं। मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के प्रतिनिधिमंडल ने भी बिना किसी भेदभाव के राहत सामग्री और आवश्यक वस्तुएँ वितरित कीं। साथ ही यह मुशाहिदा किया कि मुसीबत की इस घड़ी में बगैर किसी तफरीक के प्रभावित लोग खुद भी एक-दूसरे का मदद करते नजर आ रहे हैं। इस तरह वफद को महसूस हुआ कि ये लोग इसी आपसी मेल-जोल के साथ बरसों से रहते चले आ रहे हैं और सैलाब की नाजुक घड़ी ने उन्हें और ज़्यादा एक-दूसरे के करीब तथा हमदर्द-ओ-हमनवा बना दिया है। इन ख़्यालात का इजहार मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के अमीर-ए-मुहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी और नाजिम-ए-उमूमी मौलाना मुहम्मद हारून सनाबली पर मुश्तमिल उच्चस्तरीय राहत दल ने अपने तीन दिवसीय दौरा-ए-असम से वापसी पर जराए-इबलाग के नाम जारी एक बयान में किया। प्रेस रिलीज के अनुसार, मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद की उच्च कियादत ने इस दौरान प्रांतीय जमीयत अहल-ए-हदीस असम के अमीर मौलाना हिफ्जुर्रहमान मदनी और दूसरे अहबाब-ए-जमीयत की रहनुमाई में दूसरे रोज असम के जिला सबसागर के सैलाब-प्रभावित इलाकों, खास तौर पर शांता गाँव, नेपाली कोठी, शांतक, शिमलगुड़ी, रामू गाँव आदि का दौरा किया, जो अपनी तबाही-बर्बादी की कहानी खुद सुना रहे थे। दल ने वहाँ के हालात का जायजा लिया, प्रभावित लोगों को तसल्ली दी, उनके बीच कुछ देर रहकर उनका गम बाँटने की कोशिश की और उनके बीच जरूरी सामान, खास तौर पर गैस चूल्हा, रेगुलेटर, भगोना, कड़ाही, थाली, जग, मग, गिलास आदि तक्सीम किए। इस सफर में इस्माइल तामुली, यासमीन ख़ान और दूसरे समाजी कारकुनान भी शरीक रहे। प्रेस रिलीज के अनुसार प्रांतीय जमीयत अहल-ए-हदीस असम के तवस्सुत से प्रभावित लोगों की मदद का सिलसिला जारी है। जल्द ही मंसूबा-बंदी के तहत उनकी बाजआबादकारी का काम, हसब-ए-इमकान, अमल में लाया जाएगा। इंशाअल्लाह।

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद द्वारा भव्य संगोष्ठी का आयोजन १५ अगस्त, शाम साढ़े सात बजे

दिल्ली १४ अगस्त २०२६

मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर १५ अगस्त २०२६ को नमाज-ए-मगरिब के बाद अहल-ए-हदीस कम्प्लेक्स, अबुल फजल एन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। संगोष्ठी का विषय हैं "आजादी की जद्द-ओ-जहद में असलाफ की कुर्बानियाँ मुल्क-ओ-मिल्लत की तामीर-ओ-तरक्की के लिए रोल मॉडल। इस अवसर पर देश के प्रमुख उलमा-ए-किराम, समकालीन विश्वविद्यालयों के शिक्षक तथा मुल्क-ओ-मिल्लत के विद्वान आजादी की जद्द-ओ-जहद में हमारे असलाफ की कुर्बानियों, आजादी के तकाजों तथा देश और समाज की

तामीर-ओ-तरक्क़ी के प्रति हमारी जिम्मेदारियों पर अपने विचार व्यक्त करेंगे। यह जानकारी मरकजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद की ओर से जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई।

इस मौके पर मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के अमीर-ए-मुहतरम मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी ने कहा कि इस हकीकत से हम सभी वाकिफ हैं कि आजादी हर इंसान का बुनियादी हक है। यही वजह है कि हमारे असलाफ ने वतन-ए-अजीज की आजादी के लिए बे-मिसाल जानी-ओ-माली कुर्बानियाँ पेश कीं। वे कदम-कदम पर बलाओं और आजमाइशों से दो-चार हुए और दार-ओ-रसन की खून-चका मंजिलें भी तय कीं। तब कहीं जाकर हम आजादी की नेमत से सरफराज हुए। फिर सुब्ह-ए-आजादी के बाद इसकी तामीर-ओ-तरक्क़ी का रास्ता भी काफी दुश्वार-गुजार था, जिसे हमारे असलाफ (पूर्वज) ने बिला-तफरीक-ए-मजहब-ओ-मिल्लत उसी तारीखी जज़्बा-ए- ईसार-ओ-कुर्बानी, इत्तिहाद- ओ-यकजहती, एहतराम-ए-बाहमी और फिरकावाराना हम-आहंगी के साथ अम्न-ओ-शांति के माहौल में और अजीम आईन की रोशनी में तय किया। यौम-ए-आजादी जब-जब आता है, वह इसी जज़्बा-ए-सादिक को जला बख़्शता है और इसे पूरी तवानाई के साथ नई नस्ल में परवान चढ़ाने का पैगाम देता है। साथ ही आजादी के तकाजों और मुल्क-ओ-मिल्लत की तामीर-ओ-तरक्क़ी के सिलसिले में हमारी जिम्मेदारियों को याद दिलाता है। आजादी की यादगार, उसके प्रति असलाफ की अजीम कुर्बानियों के तजकिरे तथा तारीखी उख़ुव्वत-ओ-इत्तिहाद और फिरकावाराना हम-आहंगी की तजदीद-ए-अहद के तौर पर पूरे देश में मदरसों, स्कूलों और दूसरे इदारों में यौम-ए-आजादी की तक़रीबात का एहतिमाम होता है और मुख़्तलिफ कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें मरकजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद और देश के कोने-कोने में उसके जेर-ए-निगरानी हजारों तालीमी-ओ-तरबियती इदारे भी पेश-पेश रहते हैं।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर सुबह ६ बजे अहल-ए-हदीस कम्प्लेक्स, अबुल फजल एन्क्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली में ध्वजारोहण समारोह आयोजित किया जाएगा। इसमें मर्कजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के उच्च शैक्षिक एवं शोध संस्थान अल-मअहद-उल-आली लिल-तखस्सुस फिद-दिरासातिल इस्लामिया के शिक्षक एवं विद्यार्थी, साथ ही मरकजी जमीयत अहल-ए-हदीस हिंद के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और इससे जुड़े लोग शामिल होंगे। इस अवसर पर अमीर-ए-मुहतरम द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा तथा राष्ट्रगान और राष्ट्रीय तराना प्रस्तुत किया जाएगा। इसी दिन शाम ७:३० बजे एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन होगा, जिसमें आम जनता और विशिष्टजनों से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील की गई है।

आजादी एक नेमत है, इसकी क़द्र करें और एक अमानत है, इसकी हिफाजत करें मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

❑❑❑

जमाअती ख़बरें

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के सम्मानित रुक्न-ए-मजलिस-ए-आमिला, जमीयत अब्नाए सलफिया दरभंगा के सेक्रेटरी और अल-कलम इंग्लिश स्कूल मुंबई के डायरेक्टर मौलाना मंजर अहसन सलफी साहब को सदमाः

यह खबर बेहद दुःख और अफसोस के साथ मिली कि मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के मुअज़्ज़ज़ रुक्न-ए- मजलिस-ए-आमिला, जमीयत अब्नाए सलफिया दारुल-उलूम अहमदिया सलफिया दरभंगा के सेक्रेटरी और अल-कलम इंग्लिश स्कूल, मुंबई के डायरेक्टर तथा दूसरे दीनी और तालीमी इदारों के ज़िम्मेदार-ए-आला और रुक्न, मौलाना मंजर अहसन सलफी साहब के बड़े बरादर-ए-निस्बती जनाब कमरुल हुदा साहब का १३ मई को मुंबई में लगभग ६५ साल की उम्र में लंबी बीमारी के बाद इंतिक़ाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। जनाब क़मरुल हुदा साहब बहुत शरीफ, खुश-अखलाक, मिलनसार और मेहमान-नवाज थे। उनका आबाई वतन कट्टैला मधुबनी, बिहार था और लगभग २० साल से कौसा, मुंब्रा में रह रहे थे। वह किडनी के मरीज थे और दो साल से डायलिसिस पर थे। उनके पीछे उनकी अहलिया, चार लड़के और तीन लड़कियाँ हैं। उनकी नमाज-ए-जनाजा उसी दिन नमाज-ए-मगरिब के बाद कौसा, मुंब्रा के एम.ए. वैली क़ब्रिस्तान में अदा की गई।

अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, उन्हें जन्नत-उल-फिरदौस का मकीन बनाए और उनके पीछे रहने वालों तथा सभी संबंधित लोगों को सब्र-ओ-सुलवान अता फरमाए। आमीन (शरीक-ए-गम व दुआगोः असगर अली इमाम महदी सलफी, अध्यक्ष मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के पूर्व सदस्य-ए-शूरा, देश की प्रसिद्ध धार्मिक शिक्षण संस्था जामिया रहमानिया, कांदिवली, मुंबई तथा मौलाना आजाद हाई स्कूल, मोमिनपुरा मुंबई के अध यक्ष, अन्य धार्मिक एवं आधुनिक शिक्षण संस्थानों के उच्च पदाधि ाकारी तथा जमाअत के वरिष्ठ विद्वान और प्रसिद्ध खतीब क़ारी नज्मुल हसन फैजी साहब की पत्नी के निधन पर अफसोसः

यह खबर बेहद रंज और अफसोस के साथ मिली कि मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के पूर्व रुक्न-ए-शूरा, देश की मशहूर दीनी दानिशगाह जामिया रहमानिया, कांदिवली, मुंबई और मौलाना आजाद हाई स्कूल, मोमिनपुरा, मुंबई के अध्यक्ष, दूसरे दीनी और असरी इदारों के जिम्मेदार-ए-आला तथा जमाअत के बुजुर्ग आलिम-ए-दीन और मशहूर खतीब कारी नज्मुल हसन फैजी साहब की अहलिया मोहतरमा का आज सुबह लगभग साढ़े सात बजे, लगभग ७४ साल की उम्र में इंतिकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मरहूमा नेक, खुश-अखलाक और मिलनसार महिला थीं तथा रोजे और नमाज की पाबंद थीं। वह अपने मशहूर शौहर के दीनी, तालीमी और दावती कामों में मदद करती रहीं। उन्होंने अपने बच्चों की अच्छी दीनी तालीम और तरबियत की, जो उनके लिए इंशाअल्लाह सदका-ए-जारीया है। उनके पीछे उनके शौहर कारी नज्मुल हसन फैजी साहब, एक साहबजादे हाफिज

हबीबुल्लाह साहब, तीन साहबजादियाँ जो मुअल्लिमा हैं तथा कई पोते-पोतियाँ और नाती-नातिन हैं। उनकी नमाज-ए-जनाजा २० जुलाई २०२६, नमाज-ए-इशा के बाद जामे मस्जिद अहले हदीस, मोमिनपुरा, मुंबई में अदा की गई। अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, उन्हें जन्नत-उल-फिरदौस की मकीन बनाए और उनके पीछे रहने वालों तथा सभी संबंधित लोगों, खास तौर पर कारी साहब को सब्र-ए-जमील अता फरमाए। आमीन (शरीक-ए-गम व दुआगोः असगर अली इमाम महदी सलफी, अमीर मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

स्वास्थ्य के लिए विशेष दुआ की अपीलः

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के मुअज़्ज़ज़ रुक्न-ए-मजलिस-ए-आमिला जनाबुल-हाज वकील अहमद साहब, नई बाजार, भदोही काफी अलील हैं। उनका कूल्हा उतर गया है और घुटने की हड्डी टूट गई है। सभी दोस्तों तथा आम और खास लोगों से खास दुआओं की पुरखुलूस अपील है। अल्लाह तआला हाजी साहब को शिफा-ए-कामिला और आजिला अता फरमाए। आमीन (अपीलकर्ता व दुआगोः असगर अली इमाम महदी सलफी, अमीर मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के शोबा-ए-दावत व-इरशाद के मुआविन जनाब अनवर अब्दुल कय्यूम अंसारी साहब का इंतिकालः

यह समाचार अत्यंत रंज और खेद के साथ प्राप्त हुआ कि मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के शोबा-ए-दावत व इरशाद के मुआविन, जनाब अनवर अब्दुल कय्यूम अंसारी साहब का पिछली रात लगभग साढ़े बारह बजे, करीब ५३ वर्ष की आयु में, दीर्घकालीन बीमारी के पश्चात इंतिकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम शरीअत के पाबंद, खुश-अखलाक, मिलनसार और जमाअती गैरत से भरपूर थे। दीनी किताबों का उनका मुताला बहुत व्यापक था। वह महिलाओं में दावत और इस्लाह के काम के लिए भी फिक्रमंद रहते थे। दिल्ली में उनका टूर्स एंड ट्रैवल्स का कारोबार था। वह कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी में मुब्तिला थे। मुंबई से लेकर दिल्ली तक उनका काफी इलाज हुआ, लेकिन उन्हें फायदा नहीं हुआ। कुछ महीने पहले वह अपने आबाई वतन डुमरियागंज, सिद्धार्थनगर चले गए थे।

मुंबई में इलाज के दौरान जब उनकी खतरनाक बीमारी की खबर मिली तो यह नाचीज उनकी इयादत के लिए पहुँचा। उनकी बीमारी की हालत देखकर जहाँ बहुत ज़्यादा रंज और अफसोस हुआ, वहीं दीन की दावत से उनकी दिलचस्पी और जमीयत व जमाअत से उनकी मोहब्बत देखकर दिल को बहुत खुशी भी हुई। अल्लाह तआला उसे उनके आमाल के तराजू में रखे।आमीन.

उनके पीछे उनकी वालिदा माजिदा(माता), अहलिया, एक लड़का, तीन लड़कियाँ, चार भाई और तीन बहनें हैं। उनकी नमाज-ए-जनाजा २ अगस्त २०२६ को सुबह १० बजे उनके आबाई वतन डुमरियागंज में अदा की गई। अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, उनकी लगजिशों से दरगुजर फरमाए, उन्हें जन्नतुल-फिरदौस का मकीन बनाए और उनके पीछे रहने वालों तथा सभी संबंधित लोगों को सब्र अता फरमाए। आमीन (शरीक-ए-गम व दुआगोः असगर अली इमाम महदी सलफी, अमीर मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

सूबाई जमीयत अहले हदीस पश्चिम बंगाल के अमीर मौलाना शमीम अख़्तर नदवी साहब को सदमा

यह दुःखद समाचार सुनकर अत्यंत रंज और अफसोस हुआ कि सूबाई जमीयत अहले हदीस पश्चिम

बंगाल के अमीर मौलाना शमीम अख़्तर नदवी साहब के जवान साल बरादर-ए-निस्बती अजीजम हाफिज रबीउल-इस्लाम का रात लगभग ३ बजे आरजीकल मेडिकल कलेज, कोलकाता में इलाज के दौरान लगभग ३२ साल की उम्र में इंतिकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अजीजम हाफिज रबीउल-इस्लाम बहुत शरीफ, खुश-अखलाक, मिलनसार और नेक नौजवान थे। उन्होंने कई इदारों के शोबा-ए-तहफीजुल-कुरआन में तदरीसी खिदमत अंजाम दी। अल्लाह तआला उनकी इस खिदमत को कबुल फरमाए। आमीन। उनके पीछे उनकी अहलिया, पाँच साल का एक बेटा, वालिदैन और भाई सद्दाम आदि हैं। उनकी नमाज-ए-जनाजा उसी दिन ३ अगस्त २०२६ को शाम ५ बजे उनके आबाई वतन बालशा बाग, मालदा, पश्चिम बंगाल में अदा की गई। अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, उन्हें जन्नत-उल-फिरदौस का मकीन बनाए और उनके परिजनों तथा सभी संबंधित लोगों को सब्र-ओ-सुलवान (धैर्य और सांत्वना) अता फरमाए।आमीन, (शरीक-ए-गम व दुआगोः असगर अली इमाम महदी सलफी, अमीर मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

सूबाई जमीयत अहले हदीस तमिलनाडु व पुदुचेरी का नया चुनाव ें १४४८ हिजरी २०२६

अहले हदीस मर्कज जमालिया, चेन्नई में रविवार, २८ जून २०२६ को सूबाई जमीयत अहले हदीस तमिलनाडु और पुदुचेरी के नए चुनाव हुए। मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद, दिल्ली की तरफ से दो मुशाहिदीन तशरीफ लाए।

१. शैख ताहा सईद ख़ालिद उमरी मदनी हफिजहुल्लाह

२. हाफिज अब्दुल क़य्यूम साहब, नायब अमीर, मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद, दिल्ली

चुनावी अमल को पारदर्शी बनाने के लिए तीन सदस्यों पर आधारित चुनावी बोर्ड बनाया गया।

१. डा. इलियास आजमी उमरी मदनी हफिजहुल्लाह

२. जनाब अल्ताफ अहमद उर्फ गयास

३. मौलवी अब्दुर्रहीम साहब उमरी, ऊटी

अल्लाह के फजूल -व- करम से अगले पाँच साल की मुद्दत के लिए निम्नलिखित लोगों को चुना गया।

अमीर शैख अनीसुर्रहमान आजमी उमरी मदनी हफिजहुल्लाह

नाजिम मौलवी अब्दुल अलीम उमरी साहब सेक्रेटरी

नाजिम-ए-मालियात डाक्टर हमीदुल्लाह जिलानी साहब खजांची

नायब अमीर हाफिज अब्दुल वाहिद उमरी मदनी हफिजहुल्लाह प्रथम नायब अमीर

शैख असदुल्लाह उमरी मदनी हफिजहुल्लाह द्वितीय नायब अमीर

भाई मुहम्मद ताहा, पुदुचेरी तृतीय नायब अमीर

नायब नाजिम मौलवी अब्दुल वहाब उमरी साहब प्रथम नायब नाजिम

रिटायर्ड डी.एस.पी. आई. नजीर अहमद साहब द्वितीय नायब नाजिम

एम.ए. फहीम साहब द्वितीय नायब नाजिम हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि वह सभी चुने गए लोगों को दीन-ए-इस्लाम की सरबुलंदी, इखलास, इत्तिहाद और मोहब्बत के साथ काम करने की तौफीक अता फरमाए और उनसे दीन -ए- इस्लाम का काम ले। आमीन (अब्दुलअलीम उमरी, नाजिम-ए-आला, सूबाई जमीयत अहले हदीस तमिलनाडु व पुदुचेरी)

मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के कारकुन मौलाना मुहम्मद अहमद सलफी साहब को सदमा

यह खबर बेहद रंज और अफसोस के साथ मिली कि मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद के कारकुन (कार्यकर्ता) मौलाना मुहम्मद अहमद

सलफी साहब के खुसर-ए-मोहतरम जनाब अब्दुल बारी पिता मुहम्मद मुनीर साहब, निवासी इटवा, सिद्धार्थनगर उत्तर प्रदेश का आज सुबह साढ़े नौ बजे लगभग ६५ साल की उम्र में इंतिकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। जनाब अब्दुल बारी साहब बहुत शरीफ, खुश-अखलाक, मिलनसार, नमाज और रोजे के पाबंद, साहिब-ए-किरदार और मेहमान-नवाज थे। अपनी दीनी, समाजी और सियासी खिदमात की वजह से इलाके में उनकी बहुत इज़्जत थी। अपने और अपने अजीजों से संबंधित शादी और निकाह की तकरीबों में खास तौर पर जोर देकर बुलाते थे। जमीयत और जमाअत के कामों से उन्हें काफी दिलचस्पी थी और राकिम से भी बहुत इज़्जत से पेश आते थे। उनके परिजनों मे पत्नी, छह लड़के और तीन लड़कियाँ हैं।

उनकी नमाज-ए-जनाजा आज ही नमाज-ए-इशा के बाद, रात ६ बजे, उनके आबाई वतन इटवा, सिद्धार्थनगर, उत्तर प्रदेश में अदा की गई। अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, उन्हें जन्नत-उल-फिरदौस का मकीन बनाए और उनके परिजनों तथा सभी संबंधित लोगों को सब्र अता फरमाए। आमीन (शरीक-ए-गम व दुआगोः असगर अली इमाम महदी सलफी, अमीर मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

डाक्टर फजलुर्रहमान मदनी रहमतुल्लाह अलैह के साहबजादे अहमद फजलुर्रहमान मुहम्मदी के इंतिकाल पर गहरा सदमा

अत्यंत दुःख और क्षोभ के साथ यह समाचार प्राप्त हुआ कि मरकजी जमीयत अहले हदीस हिंद के पूर्व रुक्न-ए-शूरा और मशहूर दीनी दानिशगाह जामिया मुहम्मदिया मंसूरा, मालेगाँव के पूर्व शैखुल-जामिया, मुअज़्ज़ज़ आलिम-ए-दीन डाक्टर फजलुर्रहमान मदनी रहमतुल्लाह अलैह के जवान साल मंझले साहबजादे अजीजम अहमद फजलुर्रहमान मुहम्मदी का पिछली रात लगभग साढ़े बारह बजे, लगभग ४२ साल की उम्र में लंबी बीमारी के बाद उनके आबाई वतन शंकर नगर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश में इंतिकाल हो गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अजीजम अहमद फजलुर्रहमान निहायत खलीक-ओ-मिलनसार, जहीन और मेहनती तथा इल्म-ओ-तहकीक के जौक-ओ-शौक से परिपूर्ण थे। जामिया मुहम्मदिया मंसूरा, मालेगाँव से फरागत के बाद जामिया इस्लामिया, मदीना मुनव्वरा से बी.ए. और जामेअतुल कसीम से एम.ए. किया और वहीं से पीएच. डी. कर रहे थे। अपने अजीम वालिद-ए-गिरामी के फतावों के मुरत्तिब और मुदव्विन थे तथा उनकी दूसरी मआरिफ-ओ-मुअल्लफात पर भी काम कर रहे थे। वह कैंसर के खतरनाक मरज में मुब्तिला थे। जब इस बीमारी का पता चला, तब तक काफी देर हो चुकी थी। सऊदी अरब के मुस्तशफा अल-मलिक फहद अत-तखस्सुसी में उनका आपरेशन भी हुआ, लेकिन सुधार के बजाय बीमारी बढ़ती गई। नतीजतन (परिणामस्वरूप) डरक्टर के मशविरे से अपने वतन लौट आए, जहाँ कुछ दिनों के बाद उनका निधन हो गया।

परिजनों में पत्नी, एक लड़का, तीन लड़कियाँ, दो भाईमुहम्मद और हेशाम और तीन बहनें हैं। उनकी नमाज-ए-जनाजा उसी दिन,१२ अगस्त २०२६ को सुबह १० बजे आबाई वतन शंकर नगर में अदा की गई। अल्लाह तआला उनकी मगफिरत फरमाए, जन्नत-उल- फ़िरदौस का मकीन बनाए और पसमांदगान व मुतअल्लेक़ीन को सब्र-ओ- सुलवान अता फरमाए। आमीन (शरीक-ए-गम व दुआगोरू असगर अली इमाम महदी सलफी, अमीर मर्कजी जमीयत अहले हदीस हिंद)

Posted On 24-25 Every Month
Posted At LPC, Delhi
RMS Delhi-110006
"Registered with the Registrar
of Newspapers for India"

AUGUST 2026
RNI - 53452/90
P.R.No.DL (DG-11)/8065/2023-25

ISLAH-E-SAMAJ

4116, Urdu Bazar, Jama Masjid, Delhi-110006

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस के ज़ेरे एहतमाम

22वाँ आल इंडिया मुसाबका हिफ्ज़ व तजवीद और तफसीर कुरआन करीम

दिनांक 1-2 नवंबर 2026 रविवार-सोमवार
स्थानः डी-254, अहले हदीस कम्लेक्स ओखला, नई दिल्ली-25

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 27 अक्टूबर 2026

एक उम्मीदवार केवल एक ही श्रेणी में भाग ले सकता है

फार्म मर्कज़ी जमीअत की वेब साइट
www.ahlehadees.org से डाउन लोड किया जा सकता है।
अधिकृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें।

मुसाबका हिफ्ज व तजवीद व तफसीरे कुरआन कमेटी
011-23273407 Fax 011-23246613
Email. Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com